डॉ. राजेन्द्र प्रसाद : 125वीं जयंती

जिनमें भारतीय संस्कार मूत्तिमान थे

शम्भु दयाल गुरु

देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी सेनानियों में अपना विशिष्ठ स्थान रखते हैं। महात्मा गांधी के चमत्कारिक प्रभाव में जिन महापुरुषों और महान महिलाओं ने अपनी जीवनधारा को संघर्ष के रास्ते पर मोड़ दिया उनमें देशबन्धु चितरंजन दास, पं. मोतीलाल नेहरू, पं. मदन मोहन मालवीय, खान अब्दुल गफ्फार खान, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, सरोजनी नायडू, अरुणा आसफ अली जैसी विभूतियों के साथ ही बाबू राजेन्द्र प्रसाद का नाम भी आदर से लिया जाता है। भारतीय संस्कार और संस्कृति उनमें मूत्तिमान थी।

उनका जन्म बिहार में सारन जिले के एक छोटे-से गाँव जीरादेई में 3 दिसम्बर, 1884 को हुआ था। उनका लालन-पालन एक स्नेही संयुक्त परिवार में हुआ। मध्यश्रेणी का खाता-पीता परिवार था। उनकी पढ़ायी-लिखायी बिहार और कलकत्ता (अब कोलकाता) में हुई। कलकत्ता में वे प्रेसीडेन्सी कॉलेज के विद्यार्थी थे। वह कॉलेज उच्चकोटि का माना जाता था। राजेन्द्र प्रसाद मेधावी छात्र थे। मैट्रिक, एफ.ए. तथा बी.ए. में उन्होंने प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किये। एम.ए. और कानून की परीक्षाओं में भी उन्हें ऊँची श्रेणियाँ मिलीं। पहले उन्होंने कलकत्ता में और पटना के उच्च न्यायालय में वकालत की।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद योग्य और प्रभावशाली वकील की ख्याति पा चुके थे। एक केस में उन्हें प्रिवी कौंसिल के सामने इंग्लैण्ड जाना पड़ा। कई माह तक मुकदमा चलता रहा। लंदन में रहते हुए उन्होंने फ्रांस, स्विट्जरलैण्ड,

जर्मनी तथा इटली की यात्राएँ कीं। स्विस में उन्होंने रोमा रोलां से भेंट की। उन फ्रांसीसी साहित्य मनीषी से मिलने की उनकी उत्कंठ इच्छा थी। रोमा रोलां ने ही उनके ठहरने का प्रबन्ध किया था।

गोखले से भेंट

सन् 1910 में कलकत्ता में कानून की पढ़ायी करते समय एक बेरिस्टर ने उन्हें गोखले जी से मिलने भेजा। उनसे कहा कि गोखले बिहार के कुछ छात्रों से मिलना चाहते हैं और तुम क्योंकि होनहार हो, उनसे मिल लो। लगभग दो घंटे तक गोखले ने राजेन्द्र प्रसाद और उनके सहपाठी को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने कहा हो सकता है तुम बड़े वकील बनो, लाखों कमाओ। बड़ी कोठी, घोड़ा-गाड़ी सब तुम्हारे पास हो। पर मुल्क का दावा भी तुम पर है। तुम पढ़ायी में अच्छे हो इसलिए दावा और अधिक है। गोखले जी ने अपना उदाहरण देते हुए कहा कि मेरे घर के लोग भी चाहते थे कि खूब पैसा कमाऊँ। पर मैंने देश सेवा का व्रत ले लिया।

गोखले जी के आग्रह का गहरा असर पड़ा। कई दिनों तक नींद नहीं आई। मंथन चलता रहा और मन में निश्चय कर लिया कि गोखले की सर्वेंट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी में शामिल हो जाएँगे, लेकिन जब घर के लोगों को मालूम पड़ा तो बड़ा रोना-धोना हुआ। उन्हें निश्चय से पीछे हटना पड़ा, लेकिन राष्ट्र सेवा का बीज मन में पड़ चुका था। एक दिन उस बीज को अंकुरित होना ही था। 1905 में बंग-भंग के विरुद्ध आन्दोलन के समय से ही उनमें राष्ट्रीयता की भावना जन्म ले चुकी थी। स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने का निश्चय किया। 1906 में कलकत्ता अधिवेशन में वे स्वयंसेवक के रूप में शामिल हुए थे। 1911 में फिर वहीं अधिवेशन हुआ जिसमें शामिल हुए और ए.आई.सी.सी. के सदस्य बने तो राष्ट्रपति बनने तक बने रहे।

गांधी-दर्शन

सन् 1917 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक कलकत्ता में हुई। राजेन्द्र प्रसाद भी उस बैठक में उपस्थित थे और इत्तफाक से गांधी जी की बाजू की कुर्सी पर बैठे थे। यहीं पहली बार गांधी जी के दर्शन हुए। उस समय चम्पारण से राजकुमार शुक्ल आए थे गांधी जी को चम्पारण ले जाने। वहाँ सौ साल से अंग्रेज किसानों पर अत्याचार कर रहे थे। वे नील की खेती करते थे और किसानों से जबरन नील की खेती कराते थे। नील के कारखाने स्थापित करने के लिए किसानों की जमीनों पर कब्जा कर लिया था। विरोध करने वालों पर अकथनीय जुल्म ढाये जा रहे थे। गांधी जी पटना पहुँचे और राजेन्द्र प्रसाद के घर पर रुके। फिर वे चम्पारण

बाम्बे कांग्रेस अधिवेशन 1934 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद महात्मा गांधी जी और पंडित मदन मोहन मालवीय जी के साथ

पहुँचे। हजारों किसानों से उनका दुःख-दर्द सुना और उनकी गवाहियाँ रिकार्ड कीं। संघर्ष शुरू हो गया। राजेन्द्र प्रसाद लगातार गांधी जी के साथ रहे। संघर्ष में जीत हुई और किसानों को राहत मिली।

आन्दोलनों का दौर

रोलट रिपोर्ट के प्रकाशित होते ही उसके विरुद्ध देश में बड़ा आन्दोलन खड़ा हो गया। उसी समय खेड़ा (गुजरात) में मालगुजारी बढ़ाने के विरोध में गांधी जी के नेतृत्व में आन्दोलन शुरू हो गया। गांधी जी के साथ राजेन्द्र प्रसाद भी गाँव-गाँव घूमने लगे। उस समय से गांधी जी का साथ प्रसाद जी ने फिर कभी नहीं छोड़ा।

जब 1920 में असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ तो राजेन्द्र प्रसाद ने कांग्रेस के नेता शौकत अली को सत्याग्रह में शामिल होने का वचन दे दिया। उसी साल सितम्बर में बिहार में राजनैतिक सम्मेलन हुआ। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद उसके अध्यक्ष चुने गए। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके जैसे त्यागी महापुरुष ने पद की चाह कभी नहीं की, लेकिन बड़े से बड़े पद उनके पीछे दौड़ते रहे। देश की जनता ने उनकी निःस्वार्थ सेवाओं के लिए उन्हें बार-बार नवाज़ा।

असहयोग आन्दोलन में सरकारी नौकरियाँ, वकालत, स्कूल-कॉलेज छोड़ना तथा उनके स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालय कायम करने का भी प्रोग्राम था। गांधी जी जब बिहार आए तो उन्होंने झरिया में एक बड़ी राशि जनता से चंदा में जोड़ी और डॉ. प्रसाद को सौंप दी। डॉ. साहब ने उस राशि से पटना में राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किया। उसका उद्घाटन स्वयं गांधी जी ने किया। प्रसाद जी उसके प्रिंसिपल बने। सन् 1923 में जबलपुर से शुरू हुआ झण्डा-सत्याग्रह का केन्द्र नागपुर बन गया। वहाँ देश भर से सत्याग्रही आकर गिरफ्तारी देने लगे। नागपुर पहुँचकर सरदार पटेल ने नेतृत्व सम्हाल लिया। डॉ. प्रसाद भी सत्याग्रहियों के जत्थे लेकर नागपुर पहुँच गए। वहाँ सरदार पटेल और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की ऐसी घनिष्ठता हुई जो समय के साथ मजबूत ही होती गई।

राष्ट्रीय नेताओं ने जनता में जागृति फैलाने और उसे भविष्य के उत्तरदायित्वों को सम्हालने के लिए तैयार करने के लिए प्रत्येक संस्था का सहारा लिया। चितरंजन दास 1924 में कलकत्ता नगर निगम के मेयर चुने गए। पं. जवाहरलाल नेहरू 1923 में ही इलाहाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष चुने जा चुके थे। डॉ. प्रसाद भी 1927 में पटना नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये।

कांग्रेस अध्यक्ष

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 1934 के बम्बई अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये थे। डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है 'बम्बई कांग्रेस की सफलता का श्रेय उसके सभापति बाबू राजेन्द्र प्रसाद के चातुर्य, कार्य-शक्ति व असाधारण दक्षता को कुछ कम नहीं है। कांग्रेस अधिवेशन में पढ़ा गया उनका भाषण उन गिने-चुने नमूनेदार अभिभाषणों में से कहा जा सकता है जो राजनीतिक स्थिति पर स्थायी प्रभाव छोड़ देते हैं।' अध्यक्षीय भाषण में देश के स्वाधीन होने में दृढ़ विश्वास प्रकट करते हुए डॉ. प्रसाद ने कहा था, 'इस स्वाधीनता आन्दोलन की शक्ति अहिंसा है।... हमारा मार्ग स्फटिक की भाँति साफ व स्वच्छ है। यह मार्ग सक्रिय, सजीव, अहिंसात्मक सामूहिक प्रतिकार का है। हम एक बार असफल हो जाएँ, दो बार असफल हो जाएँ, लेकिन एक दिन हम अवश्य सफल होंगे।... हमारे शस्त्र बेजोड़ हैं।... हमें अपने ध्येय पर अचल और अपने निश्चय पर अटल रहना चाहिए।... सत्याग्रह में पराजय को तो कोई स्थान ही नहीं है।' सत्याग्रह स्वयं ही एक भारी विजय है, क्योंकि जेम्स लॉवेल ने कहा था–

'सत्य भले ही जगतीतल में दिखे लटकता सूली पर,
और दिखे अन्याय शान से डटा हुआ सिंहासन पर,

सूली का प्रिय सखा सत्य, वह तो भी इस भावी का

पथ पलटा देगा क्षण भर में, होगा पूजित घर-घर।
सदा खड़े भगवान रहेंगे तिमिराच्छन गगन में,
अपने प्यारों को बल देने, जन में और विजन में।।'

सन् 1939 में सुभाषचन्द्र के इस्तीफे के बाद और 1947 में, दो बार और वे कांग्रेस अध्यक्ष बने।

सन् 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने लम्बा समय कारावास में बिताया, वहीं उन्होंने 'आत्मकथा' लिखना प्रारंभ की, जो जेल से छूटने के बाद पिलानी में पूरी की। उसमें उस दौर का विशद वर्णन है।

सज्जनता और सादगी उनके आभूषण थे। बचपन से ही उन्हें सादगी पसंद थी। जब वे बालक थे, उनके पिता कपड़े की दुकान पर ले गये। तरह-तरह के अच्छे कपड़े दिखाए गए, पर उन्होंने एक देहाती मोटा-सा कपड़ा पसंद किया। पिता, बालक की सादगी देखकर दंग रह गए। इस बारे में उन्होंने अपनी आत्म-कथा में लिखा है, 'मैंने कभी जीवन-भर में कपड़े और फैशन पर ध्यान ही नहीं दिया। हमने कपड़े को शरीर गर्म रखने और लज्जा-निवारण का साधन मात्र समझा।' इन पंक्तियों का लेखक उनकी सादगी का गवाह है। 1951-52 में वे कान्वोकेशन में भाषण करने सागर विश्वविद्यालय आए थे। भाषण के बाद हम छात्रगण पंक्तिबद्ध दोनों ओर खड़े हो गए उनके अभिवादन में। देखा कि जहाँ और कई लोग बढ़िया किस्म की खादी पहने थे, डॉ. प्रसाद बहुत मोटी खादी का कोट-पेंट पहने थे। राष्ट्रपति पद पर होने के बाद भी उन्होंने सादगी बनाए रखी थी।

उस समय बहुत छोटी उम्र में शादी होने का चलन था। प्रसाद जी जब पाँचवीं में पढ़ते थे, उनकी शादी तय हो गई। हाथी, घोड़ों, पालकी, बैलगाड़ियों में बारात रवाना हुई। दो दिन लगे बारात पहुँचने में। नावों में सरजू (घाघरा) नदी पार की। प्रसाद जी ने आत्मकथा में एक मजेदार किस्सा अंकित किया है। इन्हें शाम ढलते ही सोने की आदत थी। ये पालकी में थे। बारात लड़की के घर पहुँचने के पहले ही गहरी नींद में सो गए। बड़ी कोशिश से जगाए गए और द्वारचार की तथा दूसरी रस्में पूरी हुईं।

कांग्रेस में डॉ. प्रसाद की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण बनी रही। गांधी जी को कुछ अन्य सहयोगियों-शिष्यों की तरह इन पर पूरा-विश्वास था। अतः हर एक कठिन परिस्थिति में वे निर्णायक भूमिका में नजर आते हैं। यू.पी. में कांग्रेस-मुस्लिम लीग में मतभेद गहरा गए तो सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद के साथ डॉ. प्रसाद ने समन्वयक की जिम्मेदारी निभायी। इसी प्रकार कौंसिलों में शामिल होने के कुछ दिग्गज नेताओं की नीति के विरुद्ध असहयोग की नीति के समर्थन में प्रसाद जी, अन्य साथियों, जिनमें सरदार पटेल, राजा जी, एम.ए. अन्सारी शामिल थे, गांधी जी के साथ निष्ठा से खड़े थे।

गांधी जी के साथ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

इसी प्रकार सन् 1942 में जब कांग्रेस कार्यकारिणी की वर्धा में बैठक हुई और गांधी जी ने अंग्रेज सरकार को 'भारत छोड़ो' की चुनौती देने का निर्णय किया, तब डॉ. प्रसाद, सरदार पटेल तथा जे.बी. कृपलानी ने गांधी जी के विचारों का पूरा समर्थन किया। नेहरू और आज़ाद जापानी हमले से चिंतित थे, परन्तु जब भारत-छोड़ो प्रस्ताव पेश हुआ उन्होंने भी उसका उत्साह से समर्थन किया। आठ अगस्त, 1942 की रात में भारत छोड़ो प्रस्ताव पास हुआ और अगली सुबह ही सारे नेता गिरफ्तार कर लिए गए। उनमें डॉ. प्रसाद भी थे।

दो सितंबर, 1946 को जब केन्द्रीय मंत्रिमण्डल बना, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद उसमें खाद्य तथा कृषि मंत्री बने। अपने कद्दावर और अविवादित व्यक्तित्व के कारण उन्हें संविधान निर्मात्री सभा का अध्यक्ष बनाया गया। 1947 से 1950 तक उन्होंने यह सम्हाला और संविधान निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्हें 1950 में नये संविधान के अंतर्गत स्वतंत्र भारत का प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित होने का गौरव प्राप्त हुआ। यह उनकी योग्यता, कुशलता और गरिमामय व्यवहार का ही परिणाम था कि उन्होंने 1952 तथा फिर 1957 में पुनः राष्ट्रपति बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। 1962 में उन्होंने अपना राष्ट्रपति का कार्यकाल पूरा किया। सन् 1963 में इन महापुरुष का देहावसान हो गया। उनके निधन से भारत ने अपना देशरत्न खो दिया।

गांधी जी ने कहा था, 'राजेन्द्र बाबू का जैसा विनम्रतापूर्ण व्यवहार और प्रभाव है, वैसा कहीं भी, किसी भी नेता का नहीं है।'

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।) ❖